प्रथम आंग्ल-फ्रांसिसी युद्ध (1746-48) ...

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48 ई०) : कारण एवं परिणाम

(The First Carnatic War: Causes and Results)

18 वीं सदी के पूर्वार्द्ध में अंगरेज और फ्रांसीसी कम्पनियों के बीच कोई संघर्ष नहीं हुआ। दोनों का उद्देश्य व्यापार से आर्थिक लाभ प्राप्त करना था। दोनों देश के व्यापारी एक-दूसरे के प्रति मैत्रीभाव रखते थे। परन्तु यह मैत्री अधिक दिनों तक कायम नहीं रह सकी। आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लोभ में पड़कर दोनों के बीच शत्रुता पैदा हो गयी। आर्थिक प्रतिद्विन्द्विता के फलस्वरूप राजनीतिक प्रतिस्पर्धा तीव्र हो गयी।

फ्रांसीसी कम्पनी के गर्वनर ड्यूमा ने सामुद्रिक शक्ति का विस्तार करने के उद्देश्य से कर्नाटक के नवाब दोस्तअली और हैदराबाद के निजाम आसिफ जाह (निजामुल-मुल्क प्रथम) से दोस्ती कायम कर ली। अंत: ड्यूमा के नेतृत्व में फ्रांसीसियों के द्वारा राजनीतिक प्रभुत्व कायम करने की दिशा में पहला प्रयास सफल रहा।

डयूमा के बाद डुप्ले फ्रांसीसी कम्पनी का गवर्नर नियुक्त हुआ। वह अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी था। उसने फ्रांसीसी राज्य के विस्तार की नीति अपनाकर अंगरेजों के साथ संघर्ष अवश्यम्भावी बना दिया, क्योंकि दोनों भारतीय नरेशों के साथ मिलकर एक-दूसरे के विरुद्ध संघर्ष कर अपने उद्देश्य की पूर्ति करना चाहते थे।

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48 ई०)

(The First Carnatic War: Causes and Results):

भारत में अंगरेज फ्रांसीसी संघर्ष का इतिहास तीन भागों में बाँटा जाता है- 1745 ई० से 1748 ई० तक, 1749-1754 ई० तक, तथा 1758 ई० से 1763 ई० तक। इन संघर्षों का सम्बन्ध मुख्यतया दक्षिण भारत से था। इस संघर्षों के फलस्वरूप दक्षिण भारत से फ्रांसीसी शक्ति नष्ट हो गयी।

1740 ई० में ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध यूरोप में प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भ में इंगलैण्ड का प्रधानमंत्री वालपोल युद्ध में सम्मिलित नहीं हुआ। वालपोल शान्तिप्रिय नीति का पृष्ठपोषक था। परन्तु 1742 ई० में वालपोल के त्यागपत्र के बाद इंगलैण्ड ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार युद्ध में सम्मिलित हो गया। यूरोप में इंगलैण्ड और फ्रांस एक-दूसरे के विपक्षी थे। अत: यूरोपीय युद्ध की स्वाभाविक प्रतिक्रिया भारतवर्ष में भी हुई। वस्तुत: यूरोपीय युद्ध के साथ ही भारत में भी अंगरेजों और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध प्रारम्भ हो गया।

फ्रांसीसी कम्पनी का गवर्नर डुप्ले था। उसने मद्रास में अंगरेज गवर्नर को एक पत्र लिखकर युद्ध रोकने की राय दी थी। उत्तर में अंगरेज गवर्नर के द्वारा भी शान्ति कायम रखने का आश्वासन दिया गया था। दोनों कम्पनियों के अधिकारियों ने अपनी-अपनी सरकार से युद्ध न करने के पक्ष में निवेदन किया था। फ्रांसीसी सरकार ने डूप्ले की बात स्वीकार कर ली, परन्तु इंगलैण्ड की सरकार ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया और कमाण्डर बारनेट के नेतृत्व में एक जहाजी बेड़ा फ्रांसीसियों के विरुद्ध आक्रमण के लिए भेज दिया। 1745 ई० में दोनों कम्पनियों के बीच युद्ध की घोषणा कर दी गयी। अंगरेजी नौसेना पांडिचेरी पर आक्रमण के लिए तैयार थी। परन्तु डुप्ले कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन के बीच बचाव से

पांडिचेरी की रक्षा करने में सफल रहा। परन्तु अंगरेज कमाण्डर बारनेट ने फ्रांसीसी जहाजों को डुबा दिया। जिसमें डूप्ले का भी एक जहाज था।

अंगरेज कमाण्डर के व्यवहार पर क्रुद्ध होकर डुप्ले ने मॉरीशस गवर्नर और फ्रांसीसी नौसेना के सेनापति ला-बर्दिनो से सहायता की माँग की। अंगरेज कमाण्डर बारनेट पांडिचेरी तक पहुँच चुका था। संयोग से बारनेट की मृत्यु हो गयी और उसके स्थान पर पेटन नया कमाण्डर नियुक्त हुआ। 1746 ई० में ला-बर्दिनो ने पेटन को हुगली की तरफ जाने के लिए विवश कर दिया और सितम्बर, 1746 ई० में मद्रास पर आक्रमण कर उसे अपने अधीन कर लिया।

मद्रास-विजय के बाद ला-बर्दिनी और डुप्ले के बीच मतभेद हो गया। डूप्ले मद्रास पर अधिकार करने के बाद बंगाल पर आक्रमण कर अंगरेजों की शक्ति को सदा के लिए नष्ट कर देना चाहता था। परन्तु ला बर्दिनो अंगरेजों से सौदेबाजी कर उन्हें मद्रास लौटा देने के पक्ष में था। वह अंगरेज अधिकारियों से बातचीत कर तीन लाख रुपया फ्रांसीसी कम्पनी के लिए तथा एक लाख रुपया अपने लिए लेकर अगरेजों से समझौता कर लेना चाहता था। अग्रिम धनराशि के रूप में उसने अंगरेजों से 60,000 रुपया प्राप्त कर लिया था। अतः डुप्ले की इच्छा के विरुद्ध ला-बर्दिनो मद्रास अंगरेजों को सौंपकर मॉरिशस की तरफ रवाना हो गया।

डूप्ले ने ला-बर्दिनों के समझौते को ठुकरा कर मद्रास पर आक्रमण कर दिया। अंगरेजों ने कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन से सहायता की याचना की। नवाब अनवरुद्दीन ने फ्रांसीसियों को मद्रास छोड़ने का आदेश दिया। परन्तु डूप्ले राजनीति का एक मंजा हुआ खिलाड़ी था। उसने नवाब अनवरुद्दीन को यह कहकर भुलावे में रखा कि वह नवाब के लिए ही मद्रास-विजय कर रहा है। परन्तु डूप्ले की पोल शीघ्र ही खुल गयी। उसने मद्रास की लूट का सारा धन अपने पास रख लिया। असन्तुष्ट नवाब ने अपने पुत्र को फ्रांसीसियों के विरुद्ध मद्रास पर आक्रमण करने के लिए भेजा। डुप्ले और नवाब की सेना के बीच सेण्ट टामी नामक स्थान पर युद्ध हुआ। मुट्ठी भर फ्रांसीसी सेना ने डुप्ले के नेतृत्व में नवाब की सेना को पराजित कर दिया।

नवाब की सेना को पराजित करने से डूप्ले का हौसला बढ़ गया। वह भारत में फ्रांसीसी साम्राज्य कायम करने के स्वप्न देखने लगा। इस उद्देश्य से उसने मद्रास स्थित सेण्ट डेविड के अंगरेजी किले पर आक्रमण किया।

सेण्ट डेविड का किला मद्रास से केवल 12 मील की दूरी पर था। परन्तु 18 महीने के अथक प्रयत्न के बावजूद सेण्ट डेविड पर डूप्ले अधिकार नहीं कर पाया। इस बीच 6 अगस्त, 1748 ई० को अंगरेजों का एक जहाजी बेड़ा पहुँच गया। अंगरेजों ने पांडिचेरी पर घेरा डाल दिया। परन्तु शीघ्र ही अंगरेजों को पांडिचेरी पर से अपना घेरा उठा लेना पड़ा। पांडिचेरी में अंगरेजों की असफलता से डुप्ले की प्रतिष्ठा बढ़ गयी।

उसी समय 1748 ई० में यूरोप में **एक्सला-शेपल** की सन्धि से ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध समाप्त हो गया। इस प्रकार भारत में भी अंगरेजों और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध बन्द हो गया। सन्धि के अनुसार मद्रास अंगरेजों को लौटा देना पड़ा और बदले में फ्रांस को अमेरिका में लूबर का क्षेत्र प्राप्त हुआ। इस तरह से प्रथम कर्नाटक युद्ध समाप्त हो गया।